कहानी

दादा जी का अमूल्य पेड़

सुरेश एक नटखट और प्यारा बच्चा था, जो अपने दादा जी, बाबा रामदीन, की जान था. गाँव की गलियों में अक्सर दोनों की जोड़ी घूमती दिखती थी. बाबा रामदीन रोज़ाना सुरेश के लिए बाज़ार से मीठे फल लेकर आते थे, जिन्हें खाकर सुरेश खुशी से झूम उठता. दादा जी उसे कभी डांटते नहीं थे, बस प्यार से समझाते थे.

एक धूप वाली दोपहर, आम खाते हुए सुरेश ने कहा, दादा जी, अगर हम इतने सारे रसीले फल खाने के लिए बाज़ार से न खरीदकर, अपने आंगन में ही सभी तरह के पौधे लगा दें, तो कितना अच्छा हो! हम रोज़ ताज़े फल तोड़कर खाएंगे!

दादा जी मुस्कुराए. उनकी आँखों में असीम स्नेह था. उन्होंने जवाब दिया, वाह, मेरे सुरेश! क्या विचार है! पर देखो बेटा, सिर्फ फल खाने की बात नहीं है. आज हम आम का एक पेड़ लगाएंगे. तुम्हें एक सबसे ज़रूरी बात का ध्यान रखना होगा ‒ तुम्हें हर रोज़ इस नन्हे पौधे को पानी देना होगा, इसका ख़्याल रखना होगा. यह पेड़ केवल पेड़ नहीं, बल्कि हमारी जिम्मेदारी और रिश्ते की निशानी होगा.

सुरेश ने तुरंत हामी भर दी. हाँ, दादा जी! मैं वादा करता हूँ. मैं इसे अपना दोस्त समझकर बड़ा करूंगा! उसी शाम, शुभ मुहूर्त देखकर, बाबा रामदीन ने आंगन के बीचों-बीच एक आम का पौधा लगा दिया. यह दिन सुरेश के लिए एक अविस्मरणीय स्मृति बन गया.

समय तेज़ी से भागा. वर्षों बाद, सुरेश अब एक समझदार और युवा विद्यार्थी बन चुका था. आंगन का नन्हा पौधा अब घना और विशाल पेड़ बन गया था, जिसकी ठंडी छाँव में बैठकर सुरेश अपनी किताबें पढ़ता और आराम करता था. पर समय के साथ बाबा रामदीन अब

दुनिया में नहीं रहे थे. उनकी यादें हर पल सुरेश के दिल में बसी थीं, और उस आम के पेड़ को देखकर उसे हमेशा लगता कि दादा जी उसके आस-पास ही हैं. यह पेड़ मानो प्यार और मार्गदर्शन की एक जीवित मूर्ति था.

एक दिन, पेड़ पर मीठे-मीठे सुनहरे आम लगे. शाम को गली के कुछ शरारती बच्चों ने आम तोड़ने के लिए पत्थर फेंकना शुरू कर दिया. दुर्भाग्यवश, एक बड़ा पत्थर सीधा सुरेश की माँ के सिर पर जा लगा. उन्हें ज़ोरदार चोट आई और घाव हो गया.

सुरेश के पिता, रमेश जी, बहुत क्रोधित हुए. वह तुरंत बाज़ार गए और कुछ मज़दूरों को कुल्हाड़ी लेकर पेड़ काटने के लिए बुला लाए.

रमेश जी ने मज़दूरों से कहा, काट दो इस झंझट के पेड़ को! इसकी वजह से आज मेरी पत्नी को चोट लगी है. कल फिर किसी को नुकसान होगा. जैसे ही मज़दूर ने पेड़ पर कुल्हाड़ी उठाई, सुरेश दौड़कर सामने आ गया. सुरेश ने कांपती आवाज़ में कहा, पिताजी, रुक जाइए! इस पेड़ को मत काटिए!

रमेश जी गुस्से में बोले, हट जाओ सुरेश! तुम्हें नज़र नहीं आता, इस बेकार पेड़ से हमें कितना नुकसान हुआ है? बच्चे रोज़ पत्थर फेंकते हैं. यह खतरा है! इसे कट जाना ही चाहिए. सुरेश की आँखों में आंसू थे. उसने पेड़ के तने को कसकर पकड़ लिया और कहा, पिताजी, यह सिर्फ एक पेड़ नहीं है. यह मेरे दादा जी की निशानी है! जब उन्होंने इसे लगाया था, तो मुझसे कहा था कि इसका ख़्याल रखना, इसे कभी नुकसान मत होने देना. यह पेड़ ही मेरी दादा जी से जुड़ी यादों का एकमात्र सहारा है. सुरेश ने अपनी बात को तर्क से आगे बढ़ाया, पिताजी, यह पेड़ हमें ठंडी हवा देता है, इसकी लकड़ी से कीमती वस्तुएं बनती हैं, इसकी पत्तियां पूजा में काम आती हैं, और सबसे बड़ा फ़ायदा ‒ यह पेड़ हमें पर्यावरण के महत्व को सिखाता है. पेड़ काटने से नुकसान का हल नहीं निकलता. हमें बच्चों को समझाना होगा. इस पेड़ को मत काटिए, दादा जी का आशीर्वाद इसी में है.

सुरेश की माँ, जो घायल होने के बावजूद ये सब देख रही थीं, बाहर आईं. उन्होंने रमेश जी के कंधे पर हाथ रखा और कहा, रमेश, सुरेश सही कह रहा है. यह हमारे बुज़ुर्गों की निशानी है. यह हमारे घर की शोभा है. बच्चों की गलती की सज़ा हम पेड़ को नहीं दे सकते. मुझे लगता है, हमें इस पेड़ की देखभाल और सुरक्षा के लिए बाड़ लगानी चाहिए.

माँ और बेटे की गहरी भावनाओं और ठोस तर्कों के सामने रमेश जी का गुस्सा शांत हो गया. उन्हें अपनी गलती का एहसास हुआ. उन्होंने कहा, तुम दोनों सही हो. यह पेड़ वाकई हमारे लिए बहुत उपयोगी है और इसमें पिता जी का प्यार बसा है. मैं अपनी गलती मानता हूँ. हम इसे नहीं काटेंगे. बल्कि, अब हम इसकी और ज़्यादा देखभाल करेंगे.

यह सुनकर सुरेश की आँखों में खुशी के आंसू आ गए. उसने पेड़ को गले लगाया और मन ही मन कहा, दादा जी, आप हमेशा हमारे साथ रहना.

कहानी से सीख

बड़ों की बात और विरासत का सम्मान- हमें अपने बुजुर्गों की सीखों और उनके द्वारा बनाई गई विरासत (जैसे दादा जी का पेड़) का हमेशा सम्मान करना चाहिए. वे न केवल यादें हैं, बल्कि हमारे लिए जीवन का मार्गदर्शन भी हैं.

बिंदु मिलाओ

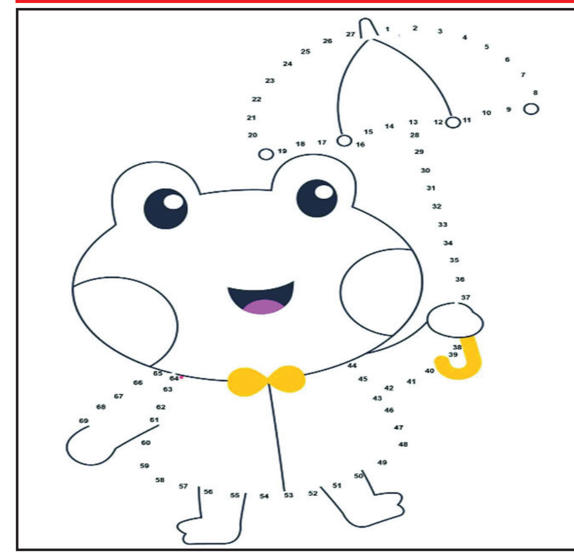

रंग भरो

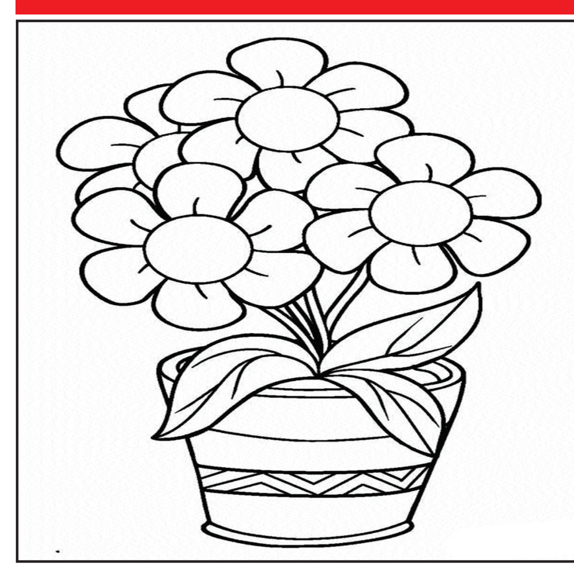

प्रेरक प्रसंग

आधुनिक भारत के निर्माता राम प्रसाद 'बिस्मिल'

रामप्रसाद 'बिस्मिल' भारत की आज़ादी के आंदोलन की क्रांतिकारी धारा के एक प्रमुख सेनानी थे जिन्हें 30 वर्ष की उम्र में ब्रिटिश सरकार ने फांसी दे दी. वे मैनपुरी षड्यंत्र व काकोरी कांड जैसी कई घटनाओं में शामिल थे तथा हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के सदस्य भी थे. बहुत ही कम लोग जानते हैं कि इस सरफ़रोश क्रांतिकारी के बहुआयामी व्यक्तित्व में संवेदनशील कवि/शायर, साहित्यकार व इतिहासकार के साथ एक बहुभाषी अनुवादक का भी निवास था. 'बिस्मिल' उनका उर्दू तख़ल्लुस (उपनाम) था जिसका हिन्दी मे अर्थ होता है 'आत्मिक रूप से आहत'. 'बिस्मिल' के अतिरिक्त वे 'राम' और 'अज्ञात' के नाम से भी लेख और कविताएं (शायरी) लिखते थे. 11 जून 1897 को उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर में

मुरलीधर और मूलमती के घर पुत्र के रूप में क्रांतिकारी राम प्रसाद 'बिस्मिल' ने जन्म लिया. किशोरावस्था से ही उन्होंने भारतीयों के प्रति ब्रिटिश सरकार के क्रूर रवैये को देखा था. इससे आहत बिस्मिल का कम उम्र से ही क्रान्तिकारियों की तरफ़ झुकाव होने लगा.

उन्होंने 1916 में 19 वर्ष की उम्र में क्रांतिकारी मार्ग पर क़दम रखा. बिस्मिल ने बंगाली क्रांतिकारी सचिन्द्र नाथ सान्याल और जदुगोपाल मुखर्जी के साथ मिलकर 'हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन' की स्थापना की और भारत को अंग्रेज़ी शासन से आज़ाद करवाने की कसम खायी. उत्तर भारत के इस संगठन के लिए बिस्मिल अपनी देशभक्त माँ मूलमती से पैसे उधार लेकर किताबें लिखते व प्रकाशित करते थे. 11 किताबें उनके जीवनकाल में प्रकाशित हुईं, जिनमें से एक भी गोरी सत्ता के कोप से नही बच सकी. 'देशवासियों के नाम', 'स्वदेशी रंग', 'मन की लहर' और 'स्वाधीनता की देवी' जैसी किताबें इसका उदाहरण हैं. इन किताबों की बिक्री से उन्हें जो पैसा मिलता था उससे वो पार्टी के लिए हथियार ख़रीदते थे. साथ ही उनकी किताबों का उद्देश्य जनमानस के मन में क्रांति के बीज बोना था.

उन्होंने ही चंद्रशेखर 'आज़ाद' और भगत सिंह जैसे नवयुवकों को 'हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन' से जोड़ा जो कि बाद में 'हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' बन गया.

रोचक तथ्य

तैराकी के खेल के बारे में जानिए

यह एक ऐसा खेल हैं जिसके बारे में हम सब जानते है और इसे पसंद भी करते है. चैंपियनशिप मीट के दौरान हम दिन के कई घंटे इसमें बिताते है और रातों को सोते नहीं है. आप सभी को लगता होगा की तैराकी के खेल के बारे में आप सभी को पता होगा लेकिन हम आपको 8 ऐसे तथ्य बताते है जिनके बारे में शायद आपको नहीं पता होगा :

- ओलिंपिक साइज के पूल यानी बावली में 9400 स्नान करने जितना पानी होता है.
  ओलिंपिक बावली में तकरीबन 2,500,000 लीटर पानी होता है.
- अमेरिका में आधे से ज्यादा लोग तैराकी नहीं जानते. बल्कि 60 प्रतिशत लोगों को तैराकी के बारे में नहीं पता.
- फ्लोरिडा एक मात्र ऐसा राज्य है जो कानून के साथ तैराकी सिखाता है. फ्लोरिडा के जैसे बाकी 49 दूसरे राज्यों में न तैराकी सीखने वाले हैं और ना ही सर्टिफिकेट वाले लाईफ गार्ड.
- ब्रैस्ट स्ट्रोक सबसे पुराना स्ट्रोक है.
  इस स्ट्रोक को ब्रिटैन में 1830 में बनाया गया था.
- तैराकी में शरीर की हर मांसपेशी का इस्तेमाल होता है.
  इस खेल में एब्डोमिनल, निचली पीठ, कंधे, हाथ, ऊपरी पीठ और शरीर के हर हिस्से की मांसपेशी का इस्तेमाल होता है. कौन कहता है की तैराकी मुश्किल नहीं है?
- एक सीजन में एक औसत तैराक हाई स्कूल तक 1 मिलियन स्ट्रोक तैराकी करता है.
  यह नंबर उन लोगों के लिए बढ़ जाता है जो पूरे साल तैराकी करते है या फिर दोहरी तैराकी करते है.
- कुछ तैराक पानी में छी भी कर देते है. हमें पता है किआप क्या सोच रहे होंगे.
- सबसे युवा विश्व चैंपियन 14 साल में बना था.
  इयान थोर्प ने 14 साल की उम्र में 400 मीटर के तैराकी में फ्रीस्टाइल को जीता था.

भूल भुलैया

जानकारी

सौर मंडल का सबसे ठंडा ग्रह : यूरेनस

सौर मंडल का सबसे ठंडा ग्रह यूरेनस है. यूरेनस सूरज से सातवां ग्रह है और यह अपने बेहद ठंडे तापमान के लिए जाना जाता है. इसका औसत तापमान लगभग -224 डिग्री सेल्सियस है. यह तापमान इतना कम है कि यहाँ तक कि पानी, हवा, और यहाँ तक कि मीथेन गैस भी जम जाती है. यही वजह है कि यूरेनस को सौर मंडल का सबसे ठंडा ग्रह कहा जाता है. क्यों है यूरेनस इतना ठंडा? यूरेनस का ठंडा होना कई कारणों से है-

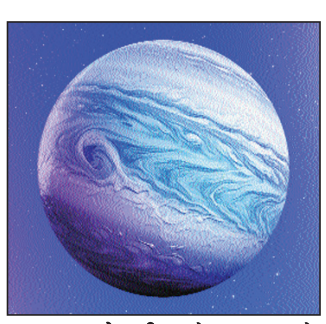

सूरज से दूरी- यूरेनस सूरज से बहुत दूर है. यह सूरज से औसतन 2.9 अरब किलोमीटर की दूरी पर है. सूरज की रोशनी को यूरेनस तक पहुँचने में लगभग 2.5 घंटे लगते हैं, और इस दूरी की वजह से सूरज की गर्मी यहाँ तक नहीं पहुँच पाती.

वायुमंडल की संरचना- यूरेनस का वायुमंडल हाइड्रोजन, हीलियम, और मीथेन गैस से बना है. मीथेन गैस सूरज की रोशनी को अवशोषित कर लेती है और गर्मी को अंतरिक्ष में वापस भेज देती है, जिससे ग्रह और ठंडा हो जाता है.

आंतरिक गर्मी की कमी- बृहस्पति और शनि जैसे गैस दानव ग्रहों में आंतरिक गर्मी होती है, जो उन्हें गर्म रखती है. लेकिन यूरेनस में यह आंतरिक गर्मी बहुत कम है, जिसके कारण यह ठंडा रहता है.

मज़ेदार तथ्य- यूरेनस का तापमान इतना कम है कि अगर आप वहाँ एक सेकंड के लिए भी जाएँ, तो आप तुरंत जम जाएँगे. यहाँ तक कि सौर मंडल का सबसे ठंडा ग्रह होने के बावजूद, यूरेनस की सतह पर बर्फीले बादल और हवाएँ चलती हैं, जो 900 किमी/घंटा की रफ्तार तक पहुँच सकती हैं!

कविता

आकाश की सैर

नन्हे-मुन्ने बच्चों, सुनो एक बात,
आकाश है नीला, करता है मुलाकात.
सूरज चमकता, जैसे सुनहरा ताज,
चाँद दिखे रात में, करता है राज.

तारे टिमटिमाते, जैसे छोटे दीप,
आकाश में उड़ते, बादल हैं सजीव.

कभी बनते गोल, कभी बनते हाथी,
बच्चों को दिखाते, अपने साथी.

पंछी चहकते, उड़ते हैं आज़ाद,
आकाश की सैर में, उनका है स्वाद.

हवा के झोंके, गाते हैं गीत,
आकाश है सुंदर, इसमें है प्रीत.

कभी बरसता पानी, बूँदों की फुहार,
आकाश से आती, खुशियों की बहार.

इंद्रधनुष बनता, सात रंगों का मेल,
बच्चे देखकर करते, खुशी का खेल.

बूझो तो जानें

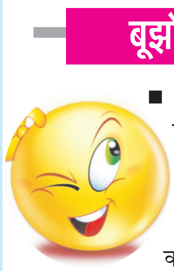

- वह क्या है जिसकी गर्दन है पर सिर नहीं?
  जवाब- बोतल
- काला घोड़ा, सफेद सवारी, एक उतरा तो दूसरे की बारी.
  जवाब- तवा और रोटी
- बूझो भैया एक पहेली, जब काटो तो नई नवेली.
  जवाब- पेंसिल
- एक लड़की 40 फीट ऊंची सीढ़ी से गिर गई, फिर भी उसे चोट नहीं लगी, कैसे?
  जवाब- क्योंकि वह सबसे निचले पायदान से गिरी थी.
- वह क्या है जो तुम्हारा है पर उसे तुमसे ज्यादा दूसरे लोग इस्तेमाल करते हैं?
  जवाब- तुम्हारा नाम
- क्या है जो हमेशा बढ़ती रहती है और कभी कम नहीं होती?
  जवाब- उम्र

हंसी-ठिठोली

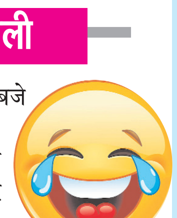

- चीकू-तुम रात में कितने बजे सोते हो?
  मीकु- अगर किताब उठा लूँ तो 9 बजे और अगर मोबाइल उठा लूं तो 2 बजे.
- टीचर- वाक्य को अंग्रेजी में ट्रांसलेट करो, वसंत ने मुझे मुक्का मारा.
  चिंटू-वसन्तपंचमी
- सोनू- हम लद्दाख घूमने गए थे, वहाँ जून में भी लोग गर्म पानी से नहाते हैं.
  नटखट नीटू- इसमें कौन सी बड़ी बात है, हम दिल्ली में भी जून में गर्म पानी से नहाते हैं.
  सोनू-वो कैसे?
  नटखट नीट-दिल्ली में जून की गर्मी में टंकी का पानी इतना गर्म हो जाता है कि नल से सिर्फ गर्म पानी ही आता है.
- इलेक्ट्रिशियन- यह रेडियो ठीक है, बस मौसम खराब होने की वजह से काम नहीं कर पा रहा है.
  यामुंडा- लो 100 रुपये, और इसमें नया मौसम डाल दो!

बच्चों अपनी कहानियां, कविताएं, पेंटिंग्स, लेख, रचनाएं आदि bhopalnav@gmail.com पर मेल करें.

अंतर ढूंढो

नीचे दिये गये दोनों चित्र देखने में समान हैं लेकिन उनमें कुछ अंतर हैं जिन्हें आप ढूंढकर निकालें.

उत्तर- 1. बादलों की संख्या, 2. भेड़िए की पूंछ, 3. बड़े पेड़ के तने का होल, 4. नीचे लगे छोटे पेड़ों की संख्या में अंतर, 5. नीचे रखा हुआ फूल, 6. दो पेड़ों के बीच में लगा एक पेड़, 7. भेड़िए की मुंह की हंसी